कौन सुने नदिया की पीर रे

डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

''कौन सुने नदिया की पीर रे''

सूखी बेहाल नदिया रो रही,
कौन सुने नदिया की पीर रे।

घर से चली थी जब वो,
अंग-संग था पानी।
इतराती चलती थी जैसे,
नार कोई मस्तानी।।

जुलुम किए लोगों ने रोज ही,
खींच लिया निर्बल का चीर रे।
कौन सुने नदिया की पीर रे।।

काट डाले पेड़ सारे,
जंगल उजाड़ दिए।
कंकरीट बोए सबने,
उपवन कबाड़ किए।।

बेगाने हो गए हैं सारे बादल,
अब कैसे बरसाएं कहीं नीर रे।
कौन सुने नदिया की पीर रे।।

चिड़ियां सब गान भूलीं,
हरियाली चली गई।
नाम ले कर विकास का,
धरती ये छली गई।।

हो गए हैं प्रेम गीत मौन सब,
रोती है दूर खड़ी हीर रे।
कौन सुने नदिया की पीर रे।।

''कल-कल करती नदिया बोली''

कल-कल करती नदिया बोली,
सुनो, सुनो रे! मेरी कहानी!
जीवन देने आई थी जग में,
अब झेल रही हूं नादानी!!

मनुज हुआ नादान भयंकर,
जल की कीमत ना जाने!
बूँद-बूँद जो गगन से पाटा,
उसको दौलत खुद की माने!!

खूब लुटाता, व्यर्थ बहाता,
मोती सा मूल्यवान पानी!
कल-कल करती नदिया बोली,
सुनो, सुनो रे! मेरी कहानी!!

मुझे प्रदूषित किया सभी ने,
नाली बना दिया है देखो!
कल रोएंगे सारे मिल कर,
ऐसा बेहाल किया है देखो!!

कभी जहां लगते थे मेले,
उन घाटों पर है वीरानी!
कल-कल करती नदिया बोली,
सुनो, सुनो रे! मेरी कहानी!!

जागो अब भी, सोचो, समझो,
जल की कीमत पहचानो!
जीना दूभर होगा जल बिन
ये बात मेरी अब तो मानो!!

संरक्षण करना सीखो सब,
बहुत कीमती है ये पानी!
कल-कल करती नदिया बोली,
सुनो, सुनो रे! मेरी कहानी!!

सपंर्क करें:
डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा ''अरुण''
पूर्व प्राचार्य,
74/3, न्यू नेहरू नगर,
रुड़की 247 667
मो. 9412070351